✺ 8 अगस्त 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

✺ ज्ञान-

1] मीठे बच्चे– यह है बेहद की अनलिमिटेड स्टेज, जिसमें तुम आत्मायें पार्ट बजाने के लिए बांधी हुई हो, इसमें हरेक का फिक्स पार्ट है।

2] कर्मातीत बनना है तो पूरा-पूरा सरेन्डर होना पड़े। अपना कुछ नहीं। सब कुछ भले हुए होंगे तब कर्मातीत बन सकेंगे। जिन्हें धन, दौलत, बच्चे आदि याद आते, वह कर्मातीत बन नहीं सकते इसलिए बाबा कहते मैं हूँ गरीब निवाज़। गरीब बच्चे जल्दी सरेन्डर हो जाते हैं। सहज ही सब कुछ भूल एक बाप की याद में रह सकते हैं।

3] तो बाप समझाते हैं– बच्चे तुम ही सबसे जास्ती पतित बने हो। पहले-पहले तुम ही आये हो पार्ट बजाने। तुमको ही पहले जाना पड़ेगा। चक्र है ना। पहले-पहले तुम ही माला में पिरायेंगे। यह रूद्र माला है ना।

4] रूद्र माला और विष्णु की माला गाई जाती है। प्रजापिता ब्रह्मा की माला नहीं है। तुम ब्रह्माकुमार-कुमारियों की माला होती नहीं क्योंकि तुम चढ़ते, गिरते हो, हार खाते हो। घड़ी-घड़ी माया गिरा देती है इसलिए ब्राह्मणों की माला नहीं बनती, जब पूरे पास हो जाते हो तब विष्णु की माला बनती हैं।

5] सूक्ष्मवतन वालों को फरिश्ता कहा जाता है। तुमको फरिश्ता बनना है, साक्षात्कार होता है, बाकी कुछ है नहीं। साइलेन्स, मूवी और यहाँ टॉकी। यह है डिटेल। बाकी नटशेल में तो फिर भी कहते हैं मनमनाभव, मानेकम् याद करो और सृष्टि चक्र को याद करो। यहाँ बैठे हो तो भी शान्तिधाम, सुखधाम को याद करो। इस पुराने दु:खधाम को भूल जाओ। यह है बेहद का सन्यास बुद्धि से। उनका है हद का सन्यास।

6] माया विकारों को कहा जाता है, न कि धन को। तुम बच्चे रावण की जंजीर में आधाकल्प से फँसे हुए थे। रावण है सबसे पुराना दुश्मन।

7] तुमको तो बाप ने बताया है, सारे कल्प की आयु ही 5 हजार वर्ष है। 84 लाख योनियां तो हैं नहीं। यहा बड़ा गपोड़ा है। सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी देवी-देवता इतने लाखों वर्ष राज्य करते थे क्या। यह बुद्धि काम नहीं करती। सन्यासी तो समझते हैं अभी हम अपने को रांग मान लेवें तो सब फालोअर्स हमको छोड़ देंगे। रेवोल्युशन हो जाए इसलिए अभी वो तुम्हारी मत पर चल अपनी राजाई नहीं छोड़ेंगे। पिछाड़ी में कुछ समझेंगे, अभी नहीं। न साहूकार लोग ही ज्ञान लेंगे।

✺ योग-

1] अब एक बाप को याद करो तो तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे इसमें है मेहनत। रचना के आदि-मध्य-अन्त को याद करो तो चक्रवर्ती राजा बन जायेंगे।

✺ धारणा-

1] काम विकार महाशत्रु है, उनसे हार नहीं खानी है। बाकी सब विकार हैं बाल बच्चे। बड़ा शत्रु है काम विकार। उनके ऊपर ही जीत पानी है। काम पर जीत पाने से तुम जगतजीत बनेंगे। यह 5 विकार आधाकल्प के दुश्मन हैं, वह भी छोड़ते नहीं है। सब चिल्लाते हैं क्रोध करना पड़ता है, परन्तु दरकार क्या पड़ी है, प्यार से काम हो सकता है। चोर को प्यार से अगर समझायेंगे तो वह झट सच कह देंगे। बाप कहते हैं मैं प्यार का सागर हूँ ना, तो बच्चों को भी प्यार से काम लेना है।

2] बाप समझाते हैं– कभी कोई क्रोध करे तो शान्त रहना चाहिए। क्रोध भूत है ना। भूत के आगे शान्ति से रेसपान्ड देना है।

[2]

✺ सेवा-

1] बाबा के पास मिलेट्री वाले भी आते हैं। उन्हों को भी बाबा समझाते हैं तुम स्वर्ग में जाना चाहते हो तो सिर्फ शिवबाबा को याद करो। उन्हों कहा जाता है– तुम युद्ध के मैदान में मरेंगे तो स्वर्ग में जायेंगे। वास्तव में युद्ध का मैदान तो यह है। वह तो लड़ाई करते-करते मर जाते हैं तो फिर वहाँ जाकर जन्म लेते हैं क्योंकि संस्कार ले जाते हैं। स्वर्ग में तो जा न सकें। तो बाबा उन्हों को समझाते थे शिवबाबा को याद करने से तुम स्वर्ग में जा सकते हो क्योंकि स्वर्ग की स्थापना हो रही है।

2] बाप से पूरा योग लग जाये तो बहुत ऊंच चला जायेगा। सारा मदार है योग पर। नॉलेज तो बहुत सहज है, तुम फील करते होंगे। बाप की याद में विघ्न पड़ते हैं। बाप कहते हैं भोजन खाओ तो भी याद में। परन्तु कोई 2 मिनट, कोई 5 मिनट याद में रहते हैं। सारा समय याद में रहें, बड़ा मुश्किल है। माया कहाँ न कहाँ उड़ाय भुला देती है। सिवाए बाप के और कोई की याद नहीं रहेगी तब ही कर्मातीत अवस्था होगी। अगर कुछ भी अपना होगा तो वह याद जरूर पड़ेगा।